HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern west)

Unit-I, (Renaissance)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 64

पुनर्जागरण (Renaissance)

भाग-2

#. साहित्य के क्षेत्र में प्रगति

साहित्य:- 14 वीं शताब्दी तक यूरोप की इतालवी, स्पेनी, फ्रांसिसी, जर्मन, अंग्रेजी आदि क्षेत्रीय भाषाओं में जनता की अपनी भाषा में नाम मात्र का साहित्य लिखा गया था। अभी तक यूरोप में जो भी साहित्य की बहुलता थी, वह सब चाहे साहित्यिक ग्रंथ हो या शास्त्रीय, सभी ग्रंथ लैटिन में ही लिखे जाते थे। इस प्रकार बोलचाल की भाषा में साहित्य की रचना पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषता थी। इतालवी साहित्यकार दाते

की कृति डिवाइन कॉमेडी आधुनिक भाषा में लिखी गई महत्वपूर्ण एवं प्रमुख कृति थी। दाते इतालवी कविता का जनक भी कहा जाता है। उसने अपनी कविताएं मातृभाषा में लिखीं।

पुनर्जागरण का पूर्ण प्रतिनिधित्व पेट्रोर्क के शिष्य ज्योवान्नी बुकासियों ने किया। उसने अपनी कथाओं से इटालियन साहित्य को समृद्ध बनाया। बुकासियों की सर्वश्रेष्ठ कृति डैकेमैरोन है। जिसमें 100 कहानियों का संग्रह है। साहित्यिक पुनर्जागरण का प्रभाव इटली के अलावा अन्य यूरोपीय देशों में भी पड़ा। पुनर्जागरण के उत्तरी यूरोप के लेखकों में हालैंड निवासी इरैस्मस अपने युग का एक प्रमुख मानवतावादी साहित्यकार था। इसकी सर्वश्रेष्ठ कृति मूर्खता की प्रशंसा (इन द प्रेज ऑफ फाली) है। इसमें चर्च की बुराइयों, धार्मिक जीवन के खोखलेपन, अंधविश्वासों एवं धर्म शास्त्रों के अज्ञान का खूब मखौल उड़ाया गया है। यह बाईबिल के पश्चात सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली पुस्तक के साथ-साथ विश्व में प्रथम बार सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तक थी। कवि जोफ्रे चौसर को अंग्रेजी काव्य का जनक कहा जाता है। जिसकी सर्वश्रेष्ठ कृति कैंटरबरी टेल्स थी। चौसर के पश्चात इंग्लैंड में पुनर्जागरण के कार्य को टॉमस मूर ने आगे बढ़ाया। उसने अपनी कृति यूटोपिया में एक आदर्श समाज का चित्र प्रस्तुत किया। फ्रांसिस बेकन इस युग का सर्वश्रेष्ठ निबंधकार था।

विश्वविख्यात कवि एवं नाटककार विलियम शेक्सपियर न केवल इंग्लैंड अपितु समस्त यूरोप के पुनर्जागरण की एक महान देन था। इसके नाटकों में मर्चेंट ऑफ वेनिस, रोमियो जूलियट, हैमलेट, मैकबेथ आदि सर्वश्रेष्ठ एवं अद्‌वितीय है। शेक्स्पीयर ने अपनी कृतियों में मानव के सभी संभव भावों एवं उसकी क्षमताओं तथा दुर्बलताओं का सांगोपांग विवेचन प्रस्तुत किया है। उसने दुखांत एवं सुखांत दोनों ही प्रकार के नाटक लिखे। शेक्सपियर के साहित्य में अंग्रेजी साहित्य का वही चरमोत्कर्ष परलक्षित होता है। जैसे कि भारतीय इतिहास के संदर्भ में गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के समकालीन कालिदास के साहित्य में परिलक्षित होता था। वस्तुतः शेक्स्पियर के नाटकों की तुलना कालिदास के मालविकाग्निमित्रम् तथा अभिज्ञान शकुंतलम से कर सकते हैं। अतः शेक्सपियर यूरोप का कालिदास था। इस प्रकार हम देखते हैं कि पुनर्जागरण काल में दाते, पेट्रोर्क तथा जोफ्रे चौसर ने अपनी कविताओं से शेक्सपियर ने अपनी कविताओं एवं नाटकों से, बेकन ने अपने निबंधों, बुकाशियों ने अपने कथाओं से एवं इरैस्‌मस ने अपने व्यंग्य द्‌वारा यूरोपीय साहित्य को प्रत्येक क्षेत्र में समृद्‌ध किया।

#. राजनीति

जहां दाते ने डिवाइन कॉमेडी के माध्यम से लोगों को मानव प्रेम, देश प्रेम तथा प्राकृतिक प्रेम की शिक्षा दी। वहीं अपनी राजनीतिक कृति द मोनार्क्या के माध्यम से यह प्रतिपादित किया कि आज अधार्मिक

विषयों में राजशक्ति ही सर्वोच्च होनी चाहिए। साहित्यिक क्षेत्र की भांति ही राजनीतिक चिंतन के क्षेत्र में भी पुनर्जागरण का अग्रदूत दांते ही था।

फ्लोरेंस के इतिहासकार मैक्यावली को आधुनिक राजनीतिक दर्शन का जनक कहा जाता है। उसने अपनी कृति द प्रिंस जो कि उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति थी, में उस राज्य की नई अवधारणा प्रस्तुत की जो तत्य युगीन यूरोप में उदित हो रहा था। मैक्यावली का राजनीतिक चिंतन धर्म से परे था। उसने राज्य को स्वतंत्र और सर्वसत्ता संपन्न माना और कहा कि धार्मिक मामले राजनीतिक मामलों से सर्वथा पृथक रखे जाने चाहिए। भारतीय इतिहास में राजनीति के क्षेत्र में जो स्थान चाणक्य के अर्थशास्त्र को प्राप्त है। वही स्थान यूरोप में मैक्यावली के द प्रिंस को प्राप्त हुआ। अतः मैक्यावली को यूरोप का चाणक्य कहा जा सकता है। दाते, मार्सिलियो एवं मैक्यावली की श्रृंखला में ही इंग्लैंड का हब्स भी पुनर्जागरण का एक प्रमुख राजनीतिक चिंतक था।

#. विश्वविद्यालय शिक्षा

14वीं शताब्दी के पहले सभी बौद्धिक गतिविधियां चर्च के अधिकारियों द्वारा संपन्न की जाती थी। 14वीं शताब्दी तक इटली के शहरों में व्यापार में तेजी आई। इस व्यापार के अनुबंध तैयार करने एवं लेखा जोखा रखने के लिए वकील एवं नोटरी का एक नया वर्ग तैयार हुआ। विश्वविद्यालयों में व्यापारिक आवश्यकता के अनुरूप कानून के अध्ययन पर जोर दिया जाता था। पडुवा एवं बोल्गना विश्वविद्यालय कानूनी

शिक्षा के केंद्र थे और विश्वविद्यालयों में भी व्यवसायिक शिक्षा प्रदान की जाती थी।

#. महिलाओं की स्थिति

पुनर्जागरण से पहले परिवार एवं समाज में पुरुषों का वर्चस्व था। महिलाओं की स्थिति काफी दयनीय थी। लेकिन पुनर्जागरण काल में महिलाओं की स्थिति में सुधार हेतु कुछ बौद्धिक महिलाओं ने कदम उठाएं जिनमें कसांड्रा फिडेल मार्चेसा ऑफ मंटुआ एवं इसाबेल के प्रयास उल्लेखनीय है। फीडेल ने प्रश्न उठाया कि महिला किस आधार पर पुरुषों की बराबरी करने में असमर्थ है। उन्होंने गणतंत्र की आलोचना की क्योंकि उसमें महिलाओं के ऊपर पुरुषों की इच्छा को प्रधानता दी थी। उन्होंने अपने लेखन द्वारा यह विचार व्यक्त किए की महिलाओं को आर्थिक शक्ति होनी चाहिए। संपत्ति का आधार होना चाहिए एवं शिक्षा का अधिकार होना चाहिए ताकि पुरुषों के वर्चस्व वाले समाज में महिलाएं अपनी पहचान बना सके।

#. भौगोलिक खोजें एवं वैज्ञानिक आविष्कार

धर्म युद्ध के फलस्वरूप यूरोप वासी पश्चिमी एशिया के संपर्क में आए। कुछ समय तक यूरोपीय लोग पूर्वी देशों में रहे। इसके प्रभाव में यूरोपियों ने रेशम व दर्पण बनाना सिखा। अपने धातु कर्म कौशलों में सुधार किया। यूरोप वासी धान निंबू खुबानी एवं तरबूज उगाना सीख गये।

सर्वाधिक लाभ यूरोप वासियों को भौगोलिक खोजो एवं ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में हुआ। अरबों ने भारत से ज्योतिष एवं गणित का जो ज्ञान प्राप्त किया था। वह सब यूरोपियों ने अरबों से सीखा। अरबों ने चीन से कागज बनाना सिखा और इस कला को यूरोपियों ने अरबों से सीखा है। यह कला यूरोप के सांस्कृतिक विकास के लिए वरदान साबित हुई। यूरोप में कि छापाखाने स्थापित हुए और साहित्य के क्षेत्र में अभिनव प्रगति संपन्न हुई। भूगोल के क्षेत्र में अरबों ने उल्लेखनीय प्रगति की थी। उन्होंने दूरबीन का निर्माण किया। जो यूरोप वासियों के अत्यधिक काम आया। भौगोलिक अनुसंधान में कुतुबनुमा एवं एस्ट्रोलैब के आविष्कार ने भौगोलिक खोजों की दिशा में अभूतपूर्व योगदान दिया।

धन्यवाद